22204 - एक कार दुर्घटना के कारण वह होश खो बैठा, क्या अब वह रमज़ान के छूटे हुए रोज़ों की क़ज़ा करेगा?

प्रश्न

एक आदमी है जो एक कार के टकराने से दुर्घटना-ग्रस्त हो गया और मरने की स्थिति में पहुँच गया। और इसमें रमज़ान के मुबारक महीने सहित एक लंबी अवधि लग गई, जबकि वह एक खतरनाक कोमा में था, कुछ भी नहीं जानता था। एक अवधि के बाद सर्वशक्तिमान अल्लाह ने उसे स्वास्थ्य लाभ दिया और उसका स्वास्थ्य पूर्ण रूप से बहाल हो गया। उसपर अपने रोज़े और नमाज़ की क़ज़ा में से क्या करना ज़रूरी है?

विस्तृत उत्तर

हर प्रकार की प्रशंसा और गुणगान केवल अल्लाह तआला के लिए योग्य है।.

यदि वस्तुस्थिति ऐसी ही थी, जैसा कि आपने उल्लेख किया है कि वह व्यक्ति दुर्घटना के परिणामस्वरूप एक लंबी अवधि तक – जिसमें रमज़ान का महीना भी शामिल है - अपना होश खो बैठा था जिसके दौरान वह कुछ भी नहीं समझता था, तो विद्वानों के दो कथनों में से अधिक सही कथन के अनुसार उसकी बेहोशी के दिनों में गुज़रे हुए रोज़े और नमाज़ की उसपर क़ज़ा करना अनिवार्य नहीं है। क्योंकि वह उस अवधि के दौरान उन दोनों कार्यों को करने के लिए मुकल्लफ़ (बाध्य) नहीं था।

और अल्लाह ही तौफ़ीक़ (सामर्थ्य) प्रदान करने वाला है। अल्लाह हमारे पैगंबर मुहम्मद और उनके परिवार और साथियों पर दया और शांति अवतरित करे।